गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

GURU GHASIDAS VISHWAVIDYALAYA, BILASPUR

(A Central University established under Central University Act, 2009)

चतुर्थ दीक्षांत समारोह

शनिवार, अप्रैल 20, 2013

FOURTH CONVOCATION

Saturday, April 20, 2013

वार्षिक प्रतिवेदन

प्रस्तुतीकरण

डॉ. लक्ष्मण चतुर्वेदी

कुलपति

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

Annual Report

By

Dr. Lakshman Chaturvedi

Vice-Chancellor

Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur (CG)

आदरणीय प्रोफेसर वेद प्रकाश जी, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं चतुर्थ दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि, विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं दीक्षांत समारोह के अध्यक्ष पद्म श्री प्रोफेसर (डॉ.) एन.आर.माधव मेनन, कार्यपरिषद् एवं विद्यापरिषद् के सदस्य, विभिन्न अध्ययनशालाओं के अधिष्ठातागण और विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण, कर्मचारीवृंद, युवा स्नातक, प्रिय विद्यार्थियों, पत्रकारगण एवं उपस्थित सम्मानित अतिथि गण।

यह निश्चित ही मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षांत समारोह में मुझे आप सभी का स्वागत करने और एक वर्ष की अल्प किन्तु आयोजनपूर्ण अवधि के लिए विश्वविद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय की स्थापना 1983 में अविभाजित मध्य प्रदेश राज्य के नौवें राज्य विश्वविद्यालय के रूप में हुई थी। 15 जनवरी 2009 को संसद के केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के द्वारा इस विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में उन्नत किया गया।

उच्च गुणवत्तायुक्त शैक्षणिक अवसरों के संदर्भ में राज्य के लोगों की दीर्घकालिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय गत चार वर्षों से आधारभूत संरचना और बेहतर शोध सुविधाओं के विकास के लिए द्रुत गति से अपने प्रयासों में सतत् संलग्न है।

आपके साथ यह बात साझा करते हुये मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे अकादमिक कार्यक्रम–शिक्षण और शोध, परीक्षाओं का आयोजन और परिणामों की घोषणा सभी समयानुसार हो रहे हैं। वर्ष भर के दौरान विश्वविद्यालय के प्रयास अकादमिक गुणवत्ता उन्नयन और प्रशासनिक उत्कृष्ठता संवर्धन की दिशा में केन्द्रित रहे हैं।

मैं इस अवसर पर वर्ष भर में हुए कुछ महत्वपूर्ण विकास कार्यों और प्रगति का एक संक्षिप्त सार आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

अकादमिक उन्नयन की दिशा में किये गए प्रयास :

गत वर्षों की भांति हमारा प्रयास रहा कि परिसर में संचालित सभी पाठ्यक्रमों में सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को आकर्षित किया जा सके। अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा में बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल हुए और इस परीक्षा के आधार पर ही प्रवेश दिया गया। इस वर्ष रायपुर को विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा का केन्द्र बनाया गया है और ऐसा इरादा है कि अन्य राज्यों में परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाई जाये जिससे अभ्यर्थियों को सुविधा हो। विश्वविद्यालय के शोध कार्यक्रम भी सफलता के पर्याय हैं। विश्वविद्यालय शोध प्रवेश परीक्षा में उपलब्ध 160 सीटों के लिए हमें 1700 आवेदन प्राप्त

हुए। सभी शोध विद्यार्थियों को शोधवृत्ति प्रदान की गई है। शोध विद्यार्थियों के लिए कोर्स वर्क की आवश्यकताओं के सन्दर्भ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशों का अनुपालन हो रहा है।

विश्वविद्यालय ने विभिन्न विभागों के लिए देश के सभी हिस्सों से 144 योग्य शिक्षकों को नियुक्त किया है। ग्यारहवीं योजना के दौरान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत शेष पदों पर नियुक्ति के लिए प्रयास जारी हैं। विश्वविद्यालय ने अब रोलिंग विज्ञापन पैटर्न को अपनाया है जिससे योग्य और इच्छुक आवेदकों को वर्ष भर आवेदन करने का अवसर मिले। इस व्यवस्था को अन्य श्रेष्ठ संस्थानों ने भी अपनाया है।

गत वर्षों की भांति विभिन्न विज्ञान/प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों के लिए प्रयोगशाला में आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए विशेष प्रयास किये गए हैं और रू. 8.00 करोड़ के उपकरणों के क्रय की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। इसके अतिरिक्त कम्प्यूटर व हार्डवेयर /सॉटवेयर संबंधी आवश्यकताओं के लिए रू. 4.00 करोड़ की राशि व्यय की जा चुकी है। 5 स्मार्ट क्लासरूम और 45 ई–क्लासरूम के लिए रू. 6.00 करोड़ की राशि नियत की जा चुकी है।

अंतर–विषयक शोध के लिए 3.0 एमव्ही पेलट्रॉन त्वरक सुविधा की स्थापना :

अत्याधुनिक त्वरक आधारित अंतर–विषयक शोध सुविधा की स्थापना के कार्य को प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है। विश्वविद्यालय की वित्त समिति और कार्यपरिषद् ने इसके आरम्भ के लिए रू. 10.00 करोड़ स्वीकृत किये हैं। रू. 5.70 करोड़ लागत से बनने वाले त्वरक भवन का निर्माण कार्य राइट्स को प्रदान किया गया है। उक्त त्वरक भवन के निर्माण हेतु रू. 11.00 करोड़ रूपये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिए गए हैं और इसमें शोध सुविधाओं के विस्तार के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा बोर्ड ऑफ रिसर्च इन न्यूक्लिअर सांइसेज योजना के तहत 8.50 करोड़ रूपये अनुमोदित किये गए हैं। ऐसा अपेक्षित है कि नेशनल इलेक्ट्रोस्टैटिक्स कॉरपोरेशन, संयुक्त राज्य अमेरिका जुलाई–अगस्त 2013 तक मशीन उपलब्ध करा देंगे तथा यह सुविधा जनवरी, 2014 तक काम करना आरम्भ कर देगी।

इस सुविधा की स्थापना से न केवल अंतर–विषयक क्षेत्रों में शोध और विकास को वांछित बल मिलेगा वरन् देश के नाभिकीय शक्ति केन्द्रों को कुशल मानव शक्ति मुहैया कराने की दृष्टि से एक मुख्य कुशल मानव संसाधन विकास केन्द्र के रूप में यह कार्य करेगा। इस सुविधा के निर्वहन के लिए विश्वविद्यालय ने रू 5.00 करोड़ की राशि का एक कार्पस फण्ड स्थापित किया है।

परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली में सुधार :

सन् 2009 में विश्वविद्यालय के उन्नयन के पश्चात् परीक्षा और मूल्यांकन व्यवस्था में कतिपय सुधार सफलतापूर्वक लागू किये गए हैं। बाह्य मूल्यांकन की व्यवस्था को शत प्रतिशत आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तित किया गया है ताकि विद्यार्थियों के प्रदर्शन का सतत मूल्यांकन किया जा सके। इस व्यवस्था से विद्यार्थियों को अपने मजबूत और कमजोर पक्षों का पता चलता है और यह उन्हें उनकी समस्याओं से उबरने में मदद करती है व उनमें आत्मविश्वास भरती है। परीक्षा और मूल्यांकन अकादमिक कैलेण्डर के अनुरूप ही संपन्न हो रहे हैं। मूल्यांकन प्रणाली में क्लास टेस्ट, क्विज, सेमीनार, प्रयोगशाला कार्य, कार्यशाला, फील्ड प्रैक्टिस, मिड–टर्म और एंड सेमेस्टर परीक्षाएं शामिल हैं।

प्रत्येक शिक्षक के द्वारा एक प्रश्न बैंक तैयार किया जाता है जिसमें 40% वस्तुनिष्ठ 60% विस्तृत प्रश्न होते हैं। यह प्रश्न बैंक शिक्षक द्वारा पढ़ाये जा रहे पाठ्यक्रम पर आधारित होता है। एंड सेमेस्टर परीक्षाओं के लिए 5 प्रश्न पत्र एक दूसरे से भिन्न तैयार किये जाते हैं। संबंधित शिक्षक परीक्षा में आए प्रश्नपत्र के लिए उत्तर–पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के पूर्व ही आदर्श उत्तर तैयार करता है जिससे मूल्यांकन में पारदर्शिता और एकरूपता बरती जा सके। मूल्यांकन के पश्चात उत्तर–पुस्तिकाएं विद्यार्थियों को दिखाई जाती है लेकिन उसके पहले आदर्श उत्तरों को सूचना पटल पर प्रदर्शित कर दिया जाता है जिससे वे अपने उत्तरोंकी जांच कर सकें। परिणामों की औपचारिक घोषणा के पूर्व ही मिड–टर्म और एंड–टर्म सेमेस्टर परीक्षाओं की मूल्यांकित उत्तर–पुस्तिकाएं विद्यार्थियों को उनके प्रदर्शन–आंकलन के लिए तुरंत दिखाई जाती हैं। इस प्रकार अपनाई गयी प्रक्रिया किसी स्तर पर संदेह के लिए कोई अवकाश नहीं छोड़ती।

समय–साध्य बाह्य मूल्यांकन व्यवस्था के विपरीत आंतरिक मूल्यांकन व्यवस्था के कारण हम एक पखवाड़े के भीतर ही परिणामों की घोषणा करने में समर्थ हुए हैं। विद्यार्थियों को मूल्यांकित उत्तर–पुस्तिकाएं प्रदान कर, पूर्ण पारदर्शिता के साथ इस व्यवस्था की स्वीकार्यता से विद्यार्थियों के संतुष्टि के स्तर और आत्मविश्वास में अभिवृद्धि हुई है और अपनी त्रुटियों को सुधारने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हुआ है।

पुनर्मूल्यांकन और पुनर्गणना की व्यवस्था को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया है, जो सुधार की प्रक्रिया में एक उपलब्धि है।

प्रायोगिक / परियोजनाओं एवं मौखिक परीक्षाओं के मूल्यांकन को भी पारदर्शी और तार्किक बनाया गया है। परीक्षक मौखिक परीक्षा के प्रश्न लिखित में पूछता है और विद्यार्थी लिखित में उत्तर देता है। विद्यार्थी और परीक्षक दोनों ही उत्तर पर हस्ताक्षर करते है। मूल्यांकन

के पश्चात् उत्तरपुस्तिका विद्यार्थियों को दिखायी जाती है यह आदर्श मूल्यांकन प्रणाली सफलतापूर्वक क्रियान्वित की जा रही है जो विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों वर्गों के द्वारा सराही गयी है।

विद्यार्थी फीडबैक प्रणाली और विश्लेषण का विकास :

विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के मूल्यांकन के लिए एक बेहतर फीडबैक प्रणाली का विकास किया है। यह फीडबैक प्रभावी और बेहतर शिक्षण की 11 विभिन्न विशेषताओं पर आधारित है, जिसमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, कौशल स्तर और अभिव्यक्ति का माध्यम शामिल है। शिक्षकों के मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन प्रपत्र प्रत्येक पाठ्यक्रम से संबंधित विद्यार्थियों द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर के मध्य में भरे जाते है और गोपनीय रूप से जमा किये जाते है। मानक सांख्यकीय प्रक्रिया के आधार पर फीडबैक का विश्लेषण कर शिक्षकों के प्रदर्शन का आकलन किया जाता है। मूल्यांकन परिणाम शिक्षकों को सम्प्रेषित किये जाते है, जिससे वे अध्यापन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि के लिए अपनी कमियों को सुधार सकें। संकायाध्यक्ष और विभागाध्यक्ष प्रत्येक शिक्षक से व्यक्तिगत रूप से बातचीत करते है और उन्हें शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया में बेहतरी के लिए निर्देशित करते है। इसके अतिरिक्त कक्षा शिक्षण के निरीक्षण के लिए सभी कक्षाओं में सीसीटीवी कैमरे लगाये गये हैं।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी से युक्त परिसर की दिशा में प्रयास :

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की नेशनल मिशन ऑन एड्‌केशन थ्रू इन्फॉरमेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी योजना के तहत विश्वविद्यालय ने 01 जीबीपीएस की लीज्ड लाइन के साथ 08 किलोमीटर लम्बा फाइबर ऑप्टिक्स आधारित कैम्पस नेटवर्क तैयार किया है। कुल 603 नोड, विश्वविद्यालय के सभी प्रशासनिक विभागों और प्रशासनिक अनुभागों को इंटरनेट की सुविधा से जोड़ते हैं। विश्वसनीय, तेज और अबाध एनकेएन आधारित इंटरनेट कनेक्शन ने परिसर के वातावरण को पूर्णतः बदल दिया है। ऑनलाइन साइंस डायरेक्ट रिसोर्सेज सहित इनफ्लिबनेट के अन्तर्गत 12000 ऑनलाइन संसाधन (जर्नल) सभी शिक्षकों की डेस्क पर हैं और विद्यार्थियों के लिए भी उपलब्ध हैं।

परिसर के वातावरण को सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से पारम्परिक से ऑनलाइन डिजिटल कैम्पस में रूपांतरित करने के लिये सभी अकादमिक और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को ऑनलाइन और स्वचालित करके एक इंटीग्रेटेड यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट सिस्टम निष्पादित किया जा रहा है। इसके क्रियान्वयन के प्रथम चरण में वित्त, लेखांकन, ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट सिस्टम (एच.आर.एम.एस.), अकादमिक, परीक्षा, गोपनीय, प्रवेश, स्टूडेंट्स पोर्टल इत्यादि के माड्यूल को पूरा कर लिया गया है और इंटीग्रेटेड यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट सिस्टम

स्थापना के लिये विशिष्टताओं के अनुरूप डाटा/सर्वर रूम तैयार किया जा चुका है। यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट सिस्टम और स्मार्ट क्लास रूम का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि प्रो. वेद प्रकाश जी, अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आज किया जायेगा। विश्वविद्यालय के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी क्योंकि संभवतः यह पहला केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जिसने अपनी अकादमिक, प्रशासनिक और वित्तीय प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। हम आंकड़ों के लिये आत्यंतिक सुरक्षा मुहैया कराने और इंटरनेट सबद्धता व निर्वाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए वैकल्पिक व्यवस्थाओं को विकसित करने की दिशा में प्रयासरत हैं।

ई–क्लास रूम और स्मार्ट क्लास रूम :

अकादमिक संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिये विश्वविद्यालय शिक्षण को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऑनलाइन और संवादपरक बनाने के क्रम में हमने पांच स्मार्ट क्लास रूम और 45 ई–क्लास रूम सुविधाओं के निर्माण का कार्य आरंभ कर दिया गया है। इन कक्षाओं में सभी आधुनिक मल्टी–मीडिया शिक्षण सहायक सामग्री जैसे प्लाज्मा स्क्रीन, एलसीडी, ओएचपी, संवादपरक पोडियम, वीडियो कान्फ्रेंसिंग, सीसीडी आधारित निरीक्षण एवं एनकेएन इंटरनेट आधारित बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली शामिल है। वीडियो कान्फ्रेंसिंग सुविधा के साथ पहला स्मार्ट क्लास रूम बनकर तैयार हो चुका है। शेष तीन माह के भीतर बनकर तैयार हो जायेंगे। हम इस सुविधा के माध्यम से पहले ही परिसर के भीतर एनकेएन श्रृंखला के व्याख्यानों (डॉ.सैम पित्रोदा द्वारा) को 3000 विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत कर चुके हैं और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ कार्यपरिषद् की बैठक वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से ही हुई है।

पुस्तकालयीन सुविधाओं में वृद्धि :

2012–13 में पुस्तकों एवं शोध पत्रिकाओं के लिये बजट आवंटन की राशि को रू. 65.00 लाख से बढ़ाकर रू. 1.00 करोड़ कर दिया गया है। इस वर्ष 12000 नई पाठ्य पुस्तकें केन्द्रीय पुस्तकालय हेतु क्रय की गई हैं और 190 राष्ट्रीय और लगभग 45 अंतर्राष्ट्रीय जर्नल उपलब्ध हैं। जर्नल के पुराने अंकों और शोध प्रबंधों के 10000 प्रतियों के साथ केन्द्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या 1,11,497 तक पहुंच गई है। इसके अलावा यूजीसी–इनफोनेट, इन्डेस्ट और साइंस डायरेक्ट डाटाबेस के द्वारा से 12,000 ऑनलाइन जर्नल शिक्षकों और विद्यार्थियों की पहुंच में है।

हाल में स्थापित विधि व न्यायालयीय विज्ञान विभाग को पुस्तकों के लिये विशेष बजट दिया गया है। विद्यार्थियों की ई–संसाधनों तक पहुंच बढ़ाने के क्रम में वर्तमान इंटरनेट सुविधा में 25 नोड और बढ़ा दिए गए हैं। अतिरिक्त 50 नोड जोड़ने हेतु योजना अनुमोदित किया गया है। कैम्पस नेटवर्क और वाई–फाई के द्वारा ऑनलाइन संसाधन बालक और बालिका छात्रावास समेत सम्पूर्ण परिसर में चौबीसों घण्टे उपलब्ध हैं।

पुस्तकालय की सुरक्षा के लिये हम आरएफआईडी तकनीकी द्वारा आधुनिक निगरानी प्रणाली को स्थापित करने की प्रक्रिया में हैं।

पुस्तकालय सुविधाओं में सुधार के लिये शिकायत पेटिका, दूरभाष, ई–मेल और व्यक्तिगत संवाद के माध्यम से फीडबैक लिया जाता है।

भवन अधोसंरचना :

अकादमिक विभागों एवं विद्यार्थियों के लिये आवासीय सुविधा और बुनियादी आवश्यकताओं के लिये स्थानाभाव को महसूस करते हुए गत वर्ष से निर्माण कार्यों हेतु विशेष प्रयास आरंभ किए गए हैं।

विश्वविद्यालय के उन्नयन के पश्चात शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक स्टाफ के लिये 173 स्टाफ क्वाटर्स मुहैया कराये गये हैं। इस वर्ष, विश्वविद्यालय के आवासीय परिसर में सड़क, उद्यान, लैंडस्केपिंग, स्ट्रीट लाइट आदि मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है। आवासीय परिसर में विकसित की गई हरियाली यहां रहने वालों को सुखद वातावरण प्रदान करती है। विश्वविद्यालय की योजना नवनियुक्त शिक्षकों के लिए 150 नये आवास बनाने की है और इस हेतु 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को प्रस्ताव भेज दिया गया है। वानिकी एवं विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के प्रथम तल के भवन के अधूरे निर्माण को पूर्ण कर लिया गया है। वहीं भौतिकी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग के भवन का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर है। जैव प्रौद्योगिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के कार्यशाला भवन का निर्माण प्रगति पर है। कैफेटेरिया, स्वास्थ्य केन्द्र, विश्वविद्यालय अतिथि गृह और अकादमिक स्टाफ कॉलेज के अतिथि गृह के नये भवन का निर्माण भी पूर्ण होने जा रहा है। तीन नये छात्रावास तथा प्राणीशास्त्र व रसायन शास्त्र विभागों के भवनों का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। भवन निर्माण समिति ने त्वरक केन्द्र व सोफिस्टीकेटेट एनालिटिकल इंस्ट्रूमेंटेशन फेसिलिटी भवन के लिए कार्यशाला–सह–केन्द्रीय शोध भवन के निर्माण के लिए अनुमोदन कर दिया है। मानविकी ब्लाक के निर्माण का कार्य भी आरंभ होने को है। वर्तमान में चल रहे और पूर्ण हो चुके निर्माण कार्यों की कुल लागत लगभग रू. 60.00 करोड़ है। विश्वविद्यालय परिसर की चारदीवारी का निर्माण द्रुत गति से हो रहा है और इसके गर्मियों तक बन जाने की उम्मीद है।

विश्वविद्यालय द्वारा कई प्रयोगशालाओं और सेमिनार कक्षों में फाल्स सीलिंग और फर्शीकरण का नवीनीकरण किया गया है। सिविल इंजीनियरिंग की नयी प्रयोगशालाओं के लिए कुछ पुराने बैरकों को पूर्णतः नया बनाया गया है।

नयी अकादमिक पहल :

विश्वविद्यालय ने विभिन्न अध्ययनशालाओं में चार नयी पीठों को स्थापित किया है। भौतिक विज्ञान में होमी जहॉगीर भाभा पीठ, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी में विश्वशरैय्या पीठ, गणितीय एवं संगणक विज्ञान में रामानुजन पीठ, भेषज विज्ञान में धनवंतरी पीठ। पीठों का उद्‌देश्य इन महानुभावों के उनके क्षेत्रों में अतुलनीय योगदान को प्रसारित करने, उनके ध्येय को आगे बढ़ाने और समकालीन परिप्रेक्ष्य में उनके क्षेत्रों से संबंधित शोध को प्रोत्साहित करना है। योजना हेतु विश्वविद्यालय ने रू. 5.00 करोड़ की राशि कार्पस फंड स्थापित किया है।

अकादमिक सुधार : शिक्षण और शोध प्रक्षेपण

विद्यार्थियों की उपलब्धियां :

शिक्षा और शोध की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विगत 4 वर्षों से किए जा रहे सतत प्रयासों ने परिणाम देना आरंभ कर दिया है। राष्ट्रीय निकायों द्वारा आयोजित विभिन्न परीक्षाओं में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त की गई सफलताओं में यह प्रयास प्रतिबिंबित हो रहे हैं। इनमें से कतिपय उपलब्धियॉ उल्लेखनीय है। एआईईईई के माध्यम से प्रवेशित बी.टेक प्रथम बैच के 111 विद्यार्थियों ने गेट परीक्षा उत्तीर्ण की है। इनमें से 3 छात्रों ने शीर्ष 50 में स्थान प्राप्त किया है। इसके अलावा अन्य विषयों से भी 69 विद्यार्थियों ने गेट परीक्षा उत्त्तीर्ण की है। इसी तरह 54 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) उत्त्तीर्ण की है और इनमें से 18 को कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति भी मिली है। यहां यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा कि अभियांत्रिकी विषयों के लिए पहली बार आयोजित नेट की परीक्षा में 12 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। इनमें से 1 ने अखिल भारतीय स्तर पर 25 वीं रैंक हासिल की है।

बेहतर अकादमिक वातावरण और बढ़ती शोध सुविधाओं ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में शोध से जुड़ने के लिए प्रेरित किया है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि डीएसटी और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति पाने वाले 14 विद्यार्थी, इंसपायर अध्येतावृत्ति पाने वाले 7 विद्यार्थी, राजीव गांधी अध्येतावृत्ति पाने वाले 7 विद्यार्थी इस वर्ष विश्वविद्यालय के शोध कार्यक्रमों से जुड़े हैं। इसके अतिरिक्त 2 सैप विभागों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 10 बेसिक साइंस शोध अध्येतावृत्ति सीधे स्वीकृत हुईं हैं।

प्रमुख शोध एवं विकास सहायता अनुदान :

त्वरक सुविधा के लिए प्राप्त अनुदानों के अतिरिक्त इस वर्ष निम्न शोध और विकास कार्यक्रम स्वीकृत हुए हैं –

1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा जीवविज्ञान में बिल्डर प्रोग्राम : स्नातक और परास्नातक शिक्षण हेतु प्रयोगशालाओं के अधोसंरचना विकास के लिए बिल्डर प्रोग्राम के तहत विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा रू 4.05 करोड़ स्वीकृत।
2. विशेष सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत विभागीय शोध सहायता : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेष सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत भेषज विज्ञान विभाग और शुद्ध एवं अनुप्रयुक्त भौतिक विज्ञान विभाग में से प्रत्येक को रू. 95.00 लाख स्वीकृत
3. विज्ञान और प्रौद्योगिकी अधोसंरचना विकास अनुदान : विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के एफ.आई.एस.टी. कार्यक्रम के तहत शुद्ध और अनुप्रयुक्त भौतिकी विभाग को रू 80.00 लाख के अनुदान हेतु दूसरी बार शामिल किया गया है।
4. सॉफिस्टकेटेड एनालिटिकल इंस्ट्रूमेंटेशन फेसिलिटीज की स्थापना : विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार ने सैफ की स्थापना के लिए विश्वविद्यालय को चिन्हित किया है। इस संबंध में विश्वविद्यालय के प्रस्ताव को अनुमोदित कर दिया गया है। इस वर्ष रू. 5.00 करोड़ के वार्षिक अनुदान के लिए औपचारिक स्वीकृति पत्र प्रतीक्षित है।

प्रायोजित शोध परियोजनाएं और स्टार्ट–अप अनुदान :

विभिन्न विभागों में शिक्षक शोध एवं विकास गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न है और यह इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अन्य स्रोतों से लगभग रू 19.00 करोड़ के कुल प्रायोजित शोध परियोजना अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इसमें रू. 13.12 करोड़ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत किये गये हैं, जिसमें नवनियुक्ति शिक्षकों के लिए स्टार्ट–अप परियोजना अनुदान शामिल है। अन्य अभिकरणों ने रू. 5.64 करोड़ स्वीकृत किये हैं। 30 संकाय सदस्यों को बड़ी शोध परियोजनाएं, 24 नये संकाय सदस्यों को विश्वविद्याल अनुदान आयोग का स्टार्ट–अप अनुदान और 5 विभागीय शोध सहायता विभिन्न अभिकरणों से मिली है।

शोध प्रकाशन :

विगत एक वर्ष के दौरान 250 से अधिक शोध पत्र (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) प्रकाशित हुए हैं।

सम्मेलन और संगोष्ठियां :

वर्ष भर के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा 10 राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन और संगोष्ठियां आयोजित की गई हैं।

नामांकन में वृद्धि :

विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि हुई है। वर्ष 2009 में यह संख्या 2000 थी जो अब बढ़कर 5008 हो गई है। पांच वर्षीय स्नातक/परास्नातक पाठ्यक्रम, तीन वर्ष पश्चात छोड़ने के विकल्प के साथ, विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान और कला के 15 पाठ्यक्रम अत्यंत लोकप्रिय है और बड़ी संख्या में प्रतिभाशाली विद्यार्थी विश्वविद्यालय में प्रवेश ले रहे हैं। उत्साहवर्धक परिणामों ने इस वर्ष सभी पाठ्यक्रमों में सीट की संख्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है।

अकादमिक स्टाफ कॉलेज :

इस वर्ष अकादमिक स्टाफ कॉलेज द्वारा निम्नलिखित पाठ्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया है –

यूजीसी ओरिएंटेशन प्रोग्राम	– 03
यूजीसी रिफ्रेशर कोर्स	– 03
कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	– 04
डीबीटी प्रायोजित–विशेष प्रशिक्षण कोर्स (एसटीसी)	– 01

अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियां :

– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा योजना अनुदान का शत प्रतिशत उपयोग।

– सहभागी गुणवत्तायुक्त शोध और शिक्षण हेतु बिलासपुर विश्वविद्यालय के साथ एम.ओ.यू.

– विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के नामांकन में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वर्ष 2009 में यह संख्या 2000 थी जो वर्ष 2012 में बढ़कर 5008 हो गई है।

– राजभाषा प्रकोष्ठ ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है और सभी दस्तावेज द्विभाषी किये जा रहे है, इसके अतिरिक्त प्रकोष्ठ द्वारा हिन्दी पत्रिका ''अक्षर'' का प्रकाशन शुरू किया गया है।

– भूमिगतजल के स्तर को बनाए रखने के लिए और गर्मी के समय जल संकट को ध्यान में रखते हुए जलाशयों को संरक्षित और नवीकृत किया जा रहा है।

– मुख्य गैर–शैक्षणिक स्वीकृत पदों (उप–कुलसचिव, लेखाधिकारी, विश्वविद्यालय अभियंता) पर नियुक्तियां की जा चुकी हैं।

– विकास की गति को बनाये रखने के लिए विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंतर अनुशासनिक शोध और विकास कार्यों को आरम्भ करके अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्रों को विस्तार दे रहा है।

छात्र परिषद :

लिंगदोह समिति की संस्तुतियों के आधार पर अकादमिक सत्र 2012–13 के लिए छात्र परिषद का गठन किया गया है। छात्र परिषद सुचारू रूप से कार्य कर रही है। यह विद्यार्थियों से संबंधित गतिविधियों के आयोजन में विश्वविद्यालय प्रशासन को सहायता करती है और विद्यार्थियों को बेहतर सुविधायें प्रदान करने के लिए सुझाव देती है। परिषद द्वारा इस वर्ष प्रथम वार्षिक टैक्निकल फैस्टिवल (टैक–फैस्ट) ''इक्वलीब्रियो'' का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया है, जिसमें कैम्पस के सभी छात्रों की व्यापक भागीदारी रही।

ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ :

सन 2012–13 के दौरान 75 विद्यार्थी कैम्पस साक्षात्कार में विभिन्न कम्पनियों यथा– प्रदान एनजीओ, दिल्ली; वाल्टेक सोल्यूशंस, बंगलौर; विप्रो बीपीओ, कोलकाता; आईसीएएन इन्फोसोफ्ट लिमिटेड, मिड केम टेक्नोलोजीस, मुंबई; श्रीराम फाइनेंस एंड ट्रांसपोर्ट, चेन्नई; पाटिल रेल इन्फ्रास्ट्रक्चर, हैदराबाद; देवाशीष इंजीनियरिंग कोंस सर्विस, द

लिंक प्राइवेट लिमिटेड द्वारा चयनित किये गए। प्रोफेसर स्तर पर ट्रेनिंग और प्लेसमेंट अधिकारी की नियुक्ति के माध्यम से विश्वविद्यालय में ट्रेनिंग और प्लेसमेंट प्रकोष्ठ को मजबूत किया जा रहा है।

छात्र सुविधा केन्द्र :

विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास एवं सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि हेतु विश्वविद्यालय द्वारा कई प्रकार की रचनात्मक गतिविधियां शुरू की गई हैं। विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा वार्षिक पत्रिका 'उड़ान', 'प्रयास', त्रैमासिक रिपोर्ट 'परिसर वार्ता' एवं कन्या छात्रावास की छात्राओं द्वारा 'पहल' का प्रकाशन किया जाता है। विश्वविद्यालय के छात्रों के बैंड को उनकी मांग के अनुरूप सभी प्रकार के वाद्य यंत्र प्रदान करते हुये प्रभावी बनाया गया है।

कैफेटेरिया :

कैन्टीन समिति द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में कैफेटेरिया का संचालन सहकारिता के आधार पर किया जाता है, जो गुणवत्ता, कीमत एवं मानक सुनिश्चित करती है। यह सभी कार्य दिवसों में सुबह 8.00 बजे से शाम 6.00 बजे तक खुली रहती है। विद्यार्थियों की मांग पर इस वर्ष कई नवीन खाद्य सामग्रियां कैफेटेरिया की सूची में शामिल की गई हैं। बैठक क्षमता एवं सेवाओं में भी सुधार किया गया है। कैफेटैरिया के नये भवन का निर्माण प्रगति पर है।

स्वास्थ्य सेवाओं में अभिवृद्धि :

ईसीजी उपकरण, रक्त परीक्षक एवं सर्वसुविधायुक्त एम्बुलेंस सहित अन्य आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराते हुये विश्वविद्यालय के चिकित्सा केन्द्र को और बेहतर बनाया गया है। पूर्णकालिक चिकित्सा अधिकारी की नियुक्ति की गई है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के लिए दो पैरामेडिकल स्टाफ की नियुक्ति पहले ही की जा चुकी है। छात्रावास के सभी छात्रों को बीमा सुविधा प्रदान की गई है। विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों एवं छात्रों को आवश्यकता होने पर बेहतर चिकित्सा के लिए बाहर भेजने की अनुशंसा भी की जाती है। विश्वविद्यालय चिकित्सा केन्द्र के नये भवन का निर्माण पूर्णता की ओर है।

कल्याणकारी योजनाएं :

छात्रों को प्रोत्साहन :

1. प्रावीण्य छात्रवृत्तिः सभी संकायों की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर।
2. शोध छात्रवृत्तिः शोध छात्रों (पी.एच–डी.) के लिए ।
3. कमजोर वर्ग के लिए छात्रवृत्तिः प्रावीण्य सूची में स्थान के आधार पर प्रदान की जाती है।
4. प्रोत्साहनः विभिन्न अन्य गतिविधियों में नगद पुरस्कार।
5. कुलाधिपति स्वर्ण पदकः पूरे विश्वविद्यालय में सभी क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी को प्रदान किया जाता है।

शिक्षकों के लिए प्रोत्साहन :

विश्वविद्यालय ऐसे शिक्षकों को प्रोत्साहन प्रदान करता है जिन्हें विशिष्ट उपलब्धि एवं प्रोजेक्ट प्राप्त हुए हैं। यदि शिक्षक को रू. 50.00 लाख से अधिक के प्रोजेक्ट स्वीकृत हुये हैं तो उन्हें एक अग्रिम वेतन वृद्धि एवं एक करोड़ से अधिक राशि के प्रोजेक्ट स्वीकृत होने की स्थिति में दो अग्रिम वेतन वृद्धि प्रदान की जाती हैं।

निःशक्त छात्रों हेतु सुविधाएं :

कल्याणकारी योजना के तहत छात्रों की आवश्यकतानुसार उपकरण एवं वाहनों की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जाती है। ऐसे छात्रों हेतु विशेष स्वास्थ्य सुविधाएं भी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाती हैं। विश्वविद्यालय छात्रावास में निवासरत सभी दृष्टिहीन छात्रों को निःशुल्क भोजन की सुविधा प्रदान की गई है। विश्वविद्यालय के सभी दृष्टिहीन छात्रों को गांधी जयंती के अवसर पर रू. 5000/– प्रतिवर्ष शिक्षण सहायक सामग्री के क्रय हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। शिक्षण के दौरान शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों को परिसर में आवागमन हेतु हस्तचालित ट्राई सायकिल उपलब्ध करायी जाती है।

समावेशी विकास द्वारा गुणवत्ता में सुधार :

आरक्षण :

यू.जी.सी./भारत सरकार द्वारा अधिसूचित, जिसमें अनुसूचित जाति के लिए 15% अनुसूचित जनजाति के 7.5% एवं अन्य पिछड़े वर्ग के लिए 27% आरक्षण संबंधी प्रावधानों को विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश, छात्रावास मे कमरों का आबंटन, शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टाफ के आवास आबंटन एवं शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टाफ की नियुक्ति मे लागू किया गया है।

अजा/अजजा एवं अन्य पिछड़ा वर्ग हेतु विशेष प्रकोष्ठ :

राज्य/केन्द्र सरकार द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति/फैलोशिप आदि विभिन्न प्रकार की योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में सहायता हेतु अजा/अजजा प्रकोष्ठ की स्थापना पहले ही की जा चुकी है। आदिवासी कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के नागरिक अधिकार पत्र के दिशा निर्देशों के अनुसार इन समुदायों हेतु शिकायत निवारण तंत्र की व्यवस्था की गई है।

समान अवसर प्रकोष्ठ :

तीन विभिन्न कोचिंग योजनाओं के तहत–नेट कोचिंग, उपचारात्मक कोचिंग और इन–सर्विस कोचिंग सफलतापूर्वक चल रही है और इनसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक और सामान्य वर्गों के 476 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे है।

जेंडर सेंसिटीविटी प्रकोष्ठ :

मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की मार्गदर्शिका और उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप एक जेंडर सेंसिटीविटी प्रकोष्ठ स्थापित किया गया है और इसने कार्य करना आरम्भ कर दिया है। विश्वविद्यालय ऐसे अकादमिक वातावरण के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है, जहां सभी स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ सकें।

अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां :

विश्वविद्यालय ने गुरू घासीदास जी के जन्म दिवस (18 दिसम्बर) को कुलोत्सव मनाया और उनके बताये हुए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती, शिक्षक दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस और खेल दिवस आदि का आयोजन विद्यार्थियों और शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता से किया गया।

विश्वविद्यालय ने स्वामी विवेकानंद और मोतीलाल नेहरू की 150वीं वर्षगांठ अत्यंत उत्साह के साथ मनायी, जिसमें विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

विश्वविद्यालय ने राज्य ''राज्योत्सव'' (26 अक्टूबर–01 नवम्बर) में भाग लिया और इसमें अपनी गतिविधियों को प्रदर्शित किया, जिससे युवा विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया जा सके।

शैक्षणिक स्टॉल की श्रेणी में विश्वविद्यालय के स्टॉल को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय ने बिलासपुर में सम्पन्न हुए राज्योत्सव में भी भाग लिया। विश्वविद्यालय के स्टॉल ने बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान आकर्षित किया और गैर–राज्य सरकारी संस्थानों की श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जैव विविधता और जलाशयों संरक्षण :

जलाशयों के रख–रखाव व मरम्मत और गहन पौधारोपण के जरिये समृद्ध जैव विविधता को संरक्षित करने के लिए व्यवस्थित प्रयास किए जा रहे हैं। वर्षा आधारित जल संग्रहण क्षेत्र से वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए एनीकट का निर्माण किया गया है। प्रयत्न किये जा रहे है कि वर्षा जल परिसर से बाहर न बहने पाये। शिक्षकों के आवासीय परिसर में दो नये उद्यानों के सौंदर्यीकरण के लिए पौधारोपण किया गया है।

परिसर सुरक्षा :

परिसर के विस्तृत क्षेत्र (658 एकड़) के अनुरूप लगभग 08 किलोमीटर लम्बी चारदीवारी का निर्माण कार्य पहले ही शुरू हो चुका है। विश्वविद्यालय की सुरक्षा के लिए सुरक्षा एजेंसी को आउटसोर्स कर और मजबूत बनाया गया है। इसमें कार्यरत् कर्मचारी सेना की पृष्ठभूमि से है। इसके अलावा प्रॉक्टोरियल बोर्ड के सदस्य और अन्य अनुशासन समितियां भी सक्रिय हैं और सतत् निगरानी बनाये रखती है।

विगत एक वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा की गई प्रगति का यह एक संक्षिप्त विवरण है। मैं आश्वस्त हूं कि विश्वविद्यालय अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ठीक दिशा में आगे बढ़ रहा है।

इसके पहले कि मैं अपनी बात समाप्त करूं, मैं कहना चाहता हूं कि अतीत में भारत के भविष्य के संदर्भ में इतनी आशा और अपेक्षाएं कभी नही रहीं। युवा स्नातकों के लिए मार्ग लम्बा है, पर यह निश्चित है कि यात्रा रोमांचक होगी। आप रचनात्मक व सकारात्मक दृष्टिकोण रखिये और समाधानों की दिशा में सोचिये न कि समस्याओं की दिशा में। जैसे–जैसे आप जीवन में आगे बढ़ेंगे, वैसे–वैसे अपने सपनों को साकार करने के लिए आपको अपने भीतर नई शक्तियों को खोजना होगा। सफलता के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और अपने विश्वासों को साथ लेकर साहस से आगे बढ़ें।

मैं आज उपाधि और पदक पाने वाले सभी लोगों को बधाई देता हूं और भविष्य में आपको आपके प्रयासों में सफलता मिले, इसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

सभी को धन्यवाद।